कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जन-चेतना यात्रा

स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने अपने जीवन की सांध्य बेला में सप्त-क्रान्ति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य सार्वदेशिक सभा के माध्यम से आर्य समाज को संजीवनीपान कराने के लिए दिया था। इस सप्त-क्रान्ति के मुद्दे थे- जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण और नारी उत्पीड़न। इन सभी महामारियों से मुक्त भारत ही आर्य राष्ट्र कहलाने के योग्य होगा, ऐसी उनकी मान्यता थी, जीवन की साध थी। इन महामारियों के विरुद्ध वे प्रायः अपने प्रवचनों व भाषणों में जन-जागरण करते रहे। उनका यह भी मत था कि देश की लगभग आधी जनता यदि रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा सुरक्षा व न्याय जैसी सात मूलभूत सुविधाओं से वंचित है तो इसका मूल कारण उक्त सात महामारियाँ ही हैं। उनका मानना था कि जिस आज़ादी को गोरे अंग्रेजों से 1947 में छीना गया था उसे शनैः शनैः काले अंग्रेज अपहृत करते रहे हैं अतः दूसरी आज़ादी प्राप्त करने के लिए जहां हमें उक्त सात महामारियों के विरुद्ध जन-जागरण करना है वहां उक्त सात मूलभूत सुविधाओं की प्राप्ति के लिए भी संघर्ष करना है। इन दो मोर्चों पर आर्य समाज ही खड़ा होकर एक निर्णायक संघर्ष को अंजाम दे सकता है। इन सभी मुद्दों पर स्वामी इन्द्रवेश जी बुद्धिजीवी चिन्तन-मंथन संगोष्ठियां में विचारों का आदान प्रदान करते भी रहे थे। सार्वजनिक मंचों से भी वे इन बातों को उठाते रहे थे।

जिस देश में कभी 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'- अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवता रमण (वास) करते हैं- यह कहा जाता था, जहां धन की देवी लक्ष्मी, युद्ध की देवी दुर्गा और विद्या की देवी सरस्वती को माना जाता है, जहां परोपकार करते दरियाओं को नदियाँ मान कर उनका नामांकन स्त्रीलिंग में गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी रखा गया, जहां पौराणिक लोग नवरात्रों में नौ देवों का नहीं बल्कि नौ देवियों की आराधना-अर्चना करते हैं, जहां पूर्णमासी और अमावस्या को व्रतधारी कन्याओं को जिमाने से पूर्व उनके चरणों को स्नेह और श्रद्धा से सहलाते और जल से धोते हैं, जहां माँ को मातृ देवोभव कह कर पिता और आचार्य से पहले सम्मानित किया जाता है उस देश की सभ्यता, संस्कृति, परम्परा, जीवन मूल्यों, धर्म व नैतिकता के सभी मानदण्डों को धराशायी कर, भू-लुण्ठित कर, मलियामेट कर आज हम कन्या भ्रूण की हत्याएँ माँ के गर्भ में ही करा रहे हैं। माँ का गर्भ इंसान का सबसे अधिक पवित्र और संरक्षित रक्षा कवच है लेकिन शैतानों के हाथ इस सुरक्षित स्थान पर भी जा पहुँचे हैं। विज्ञान और तकनीक का दुरुपयोग करते हुए अल्ट्रा साउॅण्ड मशीनों से पहले यह जाना जाता है कि गर्भ में बेटा है या बेटी। यदि बेटी है तो उसके भ्रूण को क्रूरता, पशुता, दानवता के हवाले कर, खण्ड-खण्ड, क्षत-विक्षत कर गटर में फिंकवा दिया जाता है। यह काम भगवान् माने जाने वाले डाक्टरों को शैतान बना कर कराया जाता है तथा भगवान् और शैतान के बीच की दूरी को मात्र हजार-दो हजार रुपयों से माप दिया जाता है।

कन्या भ्रूण हत्या की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण सन् 1991 में विलुप्त लड़कियों की संख्या ढाई करोड़ के लगभग थी जो सन् 2001 में बढ़ कर तीन करोड़ से ऊपर पहुँच गई। लिंगानुपात का सन्तुलन सबसे अधिक पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व गुजरात आदि प्रान्तों में है जो अपेक्षाकृत आर्थिक रूप से अधिक सम्पन्न प्रदेश माने जाते हैं। उक्त प्रदेशों में एक हजार लड़कों के पीछे पंजाब में 857, हरियाणा में 809, दिल्ली में 821 और गुजरात में 773 लड़कियाँ रह गई हैं। उपभोक्तावाद की उमड़ती आंधी में, महंगाई, बेरोजगारी, भुखमरी और दहेज की मार के कारण ही ये हत्याएँ हो रही हैं ऐसी बात नहीं है बल्कि सम्पन्न, समृद्ध, खाते-पीते परिवारों में भी कन्या भ्रूण हत्या की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। छोटा परिवार सुखी परिवार का राष्ट्रीय समाघोष, बढ़ती जनसंख्या पर शिकंजा कसने की सरकारी कोशिशें, बेटे को ही सम्पत्ति का वारिस और स्वर्ग पहुँचाने की सीढ़ी मानने की मानसिकता, बेटी को पराया धन मानने की मनोवृत्ति, बेटी को भविष्य का बोझ मानने की प्रवृत्ति- ये कुछ कारण हैं जो कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा दे रहे हैं और हत्यारों के विरुद्ध ठोस कार्रवाई भी नहीं होने दे रहे हैं। कन्या भ्रूण हत्याओं के भयंकर नतीजे भले ही आज सामने नहीं आ रहे हैं लेकिन 20-25 साल बाद जो स्थिति उभर कर सामने आयेगी वह भयावह होगी, ला-इलाज होगी और नारी की गरिमा को गिराने वाली होगी। तब नारी के अपहरण और बलात्कार की घटनाएँ बढ़ेंगी, अनमेल विवाहों

का दौर तेजी से आयेगा, नारी का सौदा गाजर-मूली की तरह होगा, वेश्यावृत्ति और व्यभिचार बढ़ेगा, हिंसा का ताण्डव चारों ओर नज़र आयेगा, अराजकता का साम्राज्य फैलेगा, पुलिस व कानून का नियंत्रण विफल होगा, नारी को परिवार में पांचाली बना कर रखा जायेगा, आट्टे-साट्टे अर्थात् आमने-सामने के विवाह फिर होने लगेंगे, नारी के प्रति सम्मान और श्रद्धा की भावना जो कल थी वह आज नहीं है और जो आज है वह कल नहीं रहेगी।

स्वामी इन्द्रवेश जी इस समूची स्थिति का अवलोकन कर चिन्तित एवं द्रवीभूत हुए। उन्होंने स्वामी अग्निवेश जी से परामर्श किया। नारी उत्पीड़न को लेकर पहले भी उनका पारस्परिक विचार-विमर्श चलता रहता था। मंचों पर भी इस बात को कई बार उठाया गया था। लेकिन वेश-द्वय इस बार इस नतीजे पर पहुँचे कि कन्या भ्रूण हत्या की समस्या इतनी तेजी से बढ़ती जा रही है कि राष्ट्र का ध्यान उस ओर खींचना आवश्यक हो गया है। तब टंकारा से अमृतसर तक कन्या भ्रूण हत्या विरोधी जन-चेतना यात्रा निकालने का निर्णय लिया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि यह जनचेतना यात्रा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में निकाली जानी चाहिए और इसमें अन्य धर्माचार्यों का सहयोग भी लिया जाये। जिस-जिस प्रदेश से यह यात्रा गुजरेगी वहां की सरकार व प्रशासन को भी विश्वास में लिया जाये। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और यूनिसेफ से भी सम्पर्क साधा जाये। सम्भव हो तो अन्तर्राष्ट्रीय मंचों से भी बेटी बचाओ की गुहार लगाई जाये तथा देश के महिला सामाजिक संगठनों को भी इस मुद्दे पर सक्रिय किया जाये। इस सम्बंध में साहित्य भी प्रकाशित हो जिसका निःशुल्क वितरण हो। इस सोच और योजना का ही परिणाम था कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, आसफअली रोड़ की ओर से तथा स्वामी इन्द्रवेश (संरक्षक), सत्यव्रत सामवेदी (कार्यकारी प्रधान), प्रो. शेर सिंह (उप-प्रधान), प्रो. कैलाशनाथ सिंह (सभा मंत्री) और श्री जगवीर सिंह एडवोकेट (संयोजक यात्रा) की ओर से यह अपील निकली कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध एक सर्वधर्म जन-चेतना यात्रा का शुभारम्भ पहली 'नवम्बर 2005 से महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा (गुजरात) से शुरू होकर मध्य गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, चण्डीगढ़, पंजाब के विभिन्न स्थानों पर सभाएँ, रैली, मशाल जुलूस व साहित्य वितरण द्वारा जन-जागरण करते हुए 15 नवम्बर 2005 को गुरु नानक देव की जयन्ती पर अमृतसर के ऐतिहासिक जलियाँवाला बाग में समापन होगा। इस राष्ट्रीय अभियान को 'बेटी बचाओ-देश बचाओ- धर्म बचाओं' के नाम से जाना जायेगा। यात्रा के दौरान प्रमुख धर्माचार्य विभिन्न स्थानों पर पधार कर जनता का मार्गदर्शन एवं आह्वान करेंगे। अपील में आर्य जनता को इस कार्यक्रम में सक्रियता से भागीदारी निभाने का आह्वान किया गया था जिससे आर्य समाज का तेजस्वी स्वरूप राष्ट्रीय पटल पर प्रकट हो सके।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस संकल्प का भारत के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने हार्दिक समर्थन व सहयोग देने का आश्वासन दिया। प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह और कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी ने इस अभियान के लिए स्वामी अग्निवेश को बधाई सन्देश भेजे। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस यात्रा के सम्बंध में दैनिक समाचार पत्रों में आधे-आधे पृष्ठ के विज्ञापन प्रकाशित कराये। गुजरात के राज्यपाल नवलकिशोर शर्मा ने चेतना यात्रा को अहमदाबाद में सम्बोधित किया और राजस्थान, हरियाणा, पंजाब के प्रशासन व सरकार ने अपना नैतिक व आर्थिक सहयोग दिया। हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन धर्माचार्यों ने इसमें शिरकत की। 'राजधर्म' (अक्तूबर 2005) ने कन्या भ्रूण हत्या को लेकर एक विशेषांक निकाला। 'वैदिक सार्वदशिक' ने यात्रा के विविध पड़ावों को सविस्तार कवरेज देकर प्रकाशित किया। इस अवसर पर सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मेरी लिखी पुस्तक- ''कन्या भ्रूण हत्या आखिर कब तक''- प्रकाशित की जिसका हजारों की संख्या में निःशुल्क वितरण किया गया। सन् 2005 की इस चेतना-यात्रा का प्रारम्भ में जो मार्ग-विवरण प्रकाशित हुआ वह इस प्रकार था

	प्रारम्भ	**रात्रि पड़ाव**	**तिथि**	**दूरी**
1.	टंकारा से	सुरेन्द्र नगर	1 नवम्बर रात्रि	150 कि.मी.

2.	सुरेन्द्र नगर से	अहमदाबाद	2 नवम्बर रात्रि	130 कि.मी.
3.	अहमदाबाद से (वाया हिम्मतनगर)	उदयपुर	3 नवम्बर रात्रि	250 कि.मी.
4.	उदयपुर से (वाया निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, ब्यावर)	अजमेर	4 नवम्बर रात्रि	280 कि.मी.
5.	अजमेर से (वाया जयपुर)	बहरोड़	5 नवम्बर रात्रि	130 कि.मी.
6.	बहरोड़ से (वाया धारूहेड़ा, गुड़गाँव)	दिल्ली	6 नवम्बर रात्रि	134 कि.मी.
7.	दिल्ली से (सोनीपत)	रोहतक	7 नवम्बर रात्रि	120 कि.मी.
8.	रोहतक से (वाया महम, हांसी, हिसार, बरवाला)	जीन्द	8 नवम्बर रात्रि	150 कि.मी.
9.	जीन्द से (वाया नरवाना, कैथल)	पानीपत	9 नवम्बर रात्रि	150 कि.मी.
10.	पानीपत से (वाया करनाल, कुरुक्षेत्र, यमुना नगर)	अम्बाला	10 नवम्बर रात्रि	200 कि.मी.
11.	अम्बाला से (फतेहगढ़ साहिब)	चण्डीगढ़	11 नवम्बर रात्रि	45 कि.मी.
12.	चण्डीगढ़ से (वाया रूपनगर, चमकौर साहिब)	लुधियाना	12 नवम्बर रात्रि	120 कि.मी.
13.	लुधियाना से (वाया फिल्लौर, नवाशहर, बगा)	जालन्धर	13 नवम्बर रात्रि	240 कि.मी.
14.	जालन्धर से (वाया करतारपुर, ब्यास)	जण्डियाला	14 नवम्बर रात्रि	80 कि.मी.
15.	जण्डियाला से	अमृतसर	15 नवम्बर प्रातः 11 बजे	130 कि.मी.

इस मार्ग-विवरण में कहीं-कहीं समयभाव के कारण किंचित-सा परिवर्तन किया गया अन्यथा कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ।

कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सर्वधर्म जन-चेतना का शुभारम्भ ऋषि-निर्वाणोत्सव, दीपावली 1 नवम्बर 2005 को महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म स्थली टंकारा से बुलंद उत्साह के साथ हुआ। इस अवसर पर भारी संख्या में श्रोता-गण एकत्र हुए। स्वामी इन्द्रवेश जी अपनी अस्वस्थता के कारण टंकारा नहीं जा सके थे अतः स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में ही यहां का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जनसभा को स्वामी अग्निवेश, स्वामी सच्चिदानन्द (गुजरात के मान्य पौराणिक संत), जैन मुनि लोकप्रकाश 'लोकेश', स्वामी धर्मबन्धु और कबीर पंथ के माननीय आचार्य श्री जगदीश राम ने सम्बोधित किया। इसी दिन एक दूसरे कार्यक्रम में जो ऋषिवर दयानन्द की जन्मस्थली पर आयोजित किया गया था उसमें भाग लेते हुए जनसभा को प्रो. कैलाशनाथ सिंह, सत्यव्रत जी सामवेदी और श्री जगवीर सिंह ने सम्बोधित किया।

उदयपुर में सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य ने और जयपुर में सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी ने सफल सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया। अजमेर में भी चेतना यात्रा का भारी स्वागत हुआ लेकिन यहां क्षुद्रवृत्ति के कुछ आर्य समाजी संन्यासियों, नेताओं, कार्यकर्ताओं ने परोपकारिणी सभा के साथ मिलकर इस चेतना यात्रा का विरोध किया। विरोध प्रदर्शन करने वालों में परोपकारिणी सभा के मंत्री डॉ. धर्मवीर, सांसद रासा सिंह रावत, राजसिंह आर्य, आबू के स्वामी धर्मानन्द, विमल वधावन आदि कई लोग थे जिन्होंने इस चेतना यात्रा को आर्य समाज विरोधी करार दिया। लेकिन सिवाय इनका मज़ाक उड़ने के कुछ परिणाम नहीं निकला। उदयपुर, जयपुर, अजमेर में आयोजित जन सभाओं में मुसलमानों ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया। जैन मुनि लोकेश जी, स्वामी सुशील, स्वामी ओंकार चैतन्य टंकारा से ही यात्रा के साथ चल रहे थे। छोटे पड़ाव की सभाएँ जो निम्बाहेड़ी, बहरोड, घटोरनी में आयोजित हुई उनमें भी भारी भीड़ दिखाई पड़ी। बहरोड में जन-सभा को सफल बनाने में श्री विरजानन्द जी का सराहनीय योगदान रहा। उदयपुर में राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा डॉ. गिरिजा व्यास ने जन सभा को सम्बोधित किया।

6 नवम्बर को जब चेतना यात्रा दिल्ली पहुँची तो केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से नई दिल्ली के मावलंकर हाऊस में स्वागत सभा का आयोजन किया गया। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री अम्बुमणि रामदास ने इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए चेतना यात्रियों का हार्दिक स्वागत किया। स्वागत-सभा में गांधीवादी चिन्तक एवं राज्य सभा की सदस्या निर्मला देशपाण्डे,

स्वामी अग्निवेश, जमाअत इस्लामी हिन्द के मोहम्मद रफीक कासमी, मुनि लोकप्रकाश, 'लोकेश', यूनिसेफ के भारत स्थित राष्ट्रीय प्रतिनिधि सिसेरियो आडर्नियो, सत्यव्रत सामवेदी, जगवीर सिंह, डॉ. प्राची आर्या, प्रिं. सदाविजय आर्य, स्वामी सुशील मुनि, स्वामी ओंकार चैतन्य, सरदार दया सिंह और रेव. वाल्सन थम्पू ने भी अपने सारगर्भित विचार रखते हुए इस चेतना-यात्रा के महत्व पर प्रकाश डाला। मंच संचालन श्रीमती कुसुम नौटियाल ने बड़ी योग्यता से किया।

हरियाणा में 7 नवम्बर को सिंधु बार्डर से प्रवेश करते हुए यह कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सर्वधर्म चेतना यात्रा सोनीपत, रोहट, खरखौदा, रोहतक, हाँसी, हिसार, जीन्द, नरवाणा, कलायत, कैथल, पूण्डरी, असन्ध, पानीपत, घरौंडा, खरकाली, करनाल, कुरुक्षेत्र और अम्बाला में जनसभाएँ करती आगे बढ़ी। इन सभी स्थानों पर जन-चेतना यात्रा का भारी स्वागत और आवभगत हुई तथा सभाओं में अच्छी खासी भीड़ भी जुटी। चूँकि हरियाणा आर्य समाज से प्रभावित क्षेत्र है इसलिए रास्ते में पड़ने वाले गाँवों में आर्य बन्धुओं ने यात्रा को रोक कर स्वागत किया, नाश्ता कराया जिससे आगे के कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हुए। रोहतक में चेतना-यात्रा रात्रि में काफी विलम्ब से पहुँची जिससे आयोजकों को निराशा हुई। पूण्डरी में भी इसी प्रकार यात्रा देर से पहुँची जहाँ प्रो. भाग सिंह आर्य ने अच्छी तैयारियाँ की हुईं थीं और तीन सौ मोटर साईकिलों की एक रैली कर चेतना यात्रा का स्वागत मूंदडी गांव में किया। खरकाली जैसे अनाम व छोटे पडाव में डॉ. यशवीर शास्त्री ने दिल खोल कर चेतना-यात्रा का स्वागत किया व करनाल के आर्य अनाथालय में स्वामी जी का भाषण कराया। हिसार में पूर्व मंत्री हरि सिंह सैनी ने स्वागत की जोरदार तैयारियाँ कर रखीं थीं। घरौंडा के निकट बसताडा गांव में श्री जगदीश आर्य ने आर्य सीनियर सैंकड्री स्कूल में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया था। असन्ध के गुरुद्वारे में सिख भाइयों ने चेतना यात्रा का भावभीना स्वागत किया। कुरुक्षेत्र में डॉ. रामप्रकाश ने दयानन्द महिला महाविद्यालय में चेतना-यात्रा का स्वागत किया व जनसभा का आयोजन कराया। अम्बाला कैंट में सुरेन्द्र कुमार, भूषण ओबराय, कर्नल सतीश कुमार धवन, नेहरू युवा केन्द्र के कार्यकर्ताओं ने एक सभा का आयोजन किया जिसे स्वामी अग्निवेश, सत्यव्रत सामवेदी, जगवीर सिंह व जर्मनी में दो बार सांसद रह चुकी एंजेलीना लुसाका ने सम्बोधित किया। श्रीमती लुसाका टंकारा से ही चेतना-यात्रा के साथ थीं।

कन्या भ्रूण हत्या विरोधी जन-चेतना यात्रा को आर्य समाज, सिख पंथ, नेहरू युवा केन्द्र और पंजाब प्रशासन ने पंजाब में सफल बनाने में अपना योगदान दिया। पंजाब में यह जन-चेतना यात्रा फतेहगढ़ साहब, चण्डीगढ़, रोपड, चमकौर साहब, लुधियाना, फिल्लौर, नवांशहर, खटकड़, बंगा, जालन्धर, जांडीवाला होते हुए अमृतसर पहुँची। फतेहगढ़ साहब में हजारों छात्रों ने चेतना-यात्रा का स्वागत किया और लगभग चार किलोमीटर लम्बी एक रैली का आयोजन भी किया गया। टोडरमल हाल में एक जन-सभा आयोजित की गई जिसे स्वामी अग्निवेश, डिप्टी कमिश्नर जसप्रीत तलवार, पूर्व सांसद सतविन्दर कौर धालीवाल, पूर्व मन्त्री रणजीत सिंह चीमा, जगवीर सिंह, सुरेशचन्द्र मोंगा एडवोकेट, दमदमा साहब के जत्थेदार ज्ञानी केवल सिंह और अकाल तख्त के पूर्व जत्थेदार प्रो. मंजीत सिंह आदि ने सम्बोधित किया। फतेहगढ़ साहब के एस.डी.एम., ए.डी.सी. और मुख्य चिकित्सा अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। 'राष्ट्रीय एकता' नामक नाटक का मंचन भी यहां किया गया।

चण्डीगढ़ में 4-5 किलोमीटर लम्बी रैली निकाली गई। सैक्टर-22 के मैदान में आयोजित जन-सभा को चर्च के फादर दरबार सिंह, जत्थेदार ज्ञानी केवल सिंह, हरियाणा के कृषि-सिंचाई-विद्युत मन्त्री कैप्टन अजय सिंह, मेजर प्रताप सिंह, इमाम मौ. मोहम्मद आज़मखान, सरदार हरशरण जीत सिंह, एंजीलीना लुसाका, जगवीर सिंह और स्वामी अग्निवेश जी ने सम्बोधित किया। रात्रि को सैक्टर-30 के लोबाना भवन में एक अन्य सभा सीनियर सिटीजन एसोसिएशन और आर्य समाज के संयुक्त प्रयास से आयोजित की गई। इस सभा में हरियाणा स्वास्थ्य विभाग की निदेशिका सुषमा, पंजाब हाईकोर्ट के जस्टिस प्रीतम पाल, रिटा-इंजीनियर ए.के. उमर, पूर्व सांसद सत्यपाल जैन एडवोकेट, हरियाणा के अटार्नी जनरल हुड्डा, कैप्टन अजय सिंह, ब्रिगेडियर मिश्रा व गुप्ता तथा स्वामी अग्निवेश जी ने अपने विचार रखे। सभा के संयोजक सुरेश चन्द मोंगा एडवोकेट थे। आ.प्र. सभा पंजाब के प्रधान बलबीर सिंह चौहान एडवोकेट भी यहां उपस्थित थे। सर्वश्री वीरेन्द्र सिंह, अशोक, बलवान सिंह, राधाकृष्ण आर्य आदि युवकों की टीम की इस आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

12 नवम्बर को रोपड में लगभग सभी स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने यात्रियों का पुरजोर स्वागत किया। रूपनगर के गुरुद्वारा सिंह सभा में एकत्रित जनता को सर्वश्री सुरजीत सिंह, जसप्रीत तलवार, ज्ञानी केवल सिंह और स्वामी अग्निवेश ने सम्बोधित किया। चमकौर साहब के पवित्र गुरुद्वारे में यात्रियों ने लंगर छका। मुख्य चिकित्सा अधिकारी यहां भी पहुँचे हुए थे। लुधियाना में सिटीजन कांउसिल और इण्डस्ट्रीयल एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में 6-7 स्थानों पर चेतना-यात्रा का स्वागत हुआ। उद्योगपतियों की चालीसों गाड़ियाँ चेतना यात्रा में सम्मिलित हो गईं। लुधियाना के बाजारों में बीसियों स्थानों पर स्वागत हुआ। 13 नवम्बर को प्रातःकालीन यज्ञ करके चेतना यात्रा फिल्लौर पहुँची। यहां जनरल अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी अपने स्टाफ के साथ स्वागत करने पहुँचे। जिला स्तर के डाक्टर व नर्सों का जमावड़ा भी यहाँ दिखाई दिया। युनिसेफ के भारतीय प्रतिनिधि सिसेरियो आडर्नियो भी यहां पहुँचे। स्वामी अग्निवेश ने यहां भाषण दिया। अगले पडाव नवांशहर में हजारों स्कूली बच्चों ने यहां स्वागत किया चार किलोमीटर तक शहर में घुमाया गया। आर्य समाज, सिख समाज, शिक्षा विभाग के स्टाफ ने मिलकर यह आयोजन किया था। स्थानीय खालसा स्कूल में सभा आयाजित हुई जिसमें डी-सी. एस.डी.एम. ए.डी.सी., सी. एम.ओ. आदि उच्चाधिकारीगण मौजूद थे। स्थानीय विधायक सरदार प्रकाश सिंह काफी उत्साहित थे। स्वामी अग्निवेश के भाषण की सर्वत्र प्रशंसा हुई। अन्य वक्ता भी यहां बोले! जिला नवांशहर की तहसील बंगा में स्थित खटकड गांव में जब यात्री-गण पहुँचे तो भाव-विह्वल हो उठे। यह गांव शहीदे आज़म भगत सिंह की पितृभूमि है। यहां का सरदार भगत सिंह संग्रहालय दर्शनीय है जहां क्रान्तिकारियों के दुर्लभ दस्तावेजों को भी यात्रियों ने देखा। बंगा में आर्य समाज ने सम्मेलन आयोजित किया जिसे सर्वश्री जगवीर सिंह, ज्ञानी केवल सिंह, डिप्टी कमिश्नर कृष्ण कुमार, स्वामी अग्निवेश जी ने सम्बोधित किया। राजेन्द्र शर्मा मण्डली के स्कूली छात्रों ने भ्रूण हत्या पर एक नाटक का मार्मिक मंचन किया जिसने सभी को रुला दिया। जिले के डाक्टर्स, नर्स, आंगनवाडी का स्टाफ, स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों ने यहां गत दो महीनों से कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध अभियान चला रखा था। इसके पीछे जिले के उपायुक्त श्री कृष्ण कुमार की प्रेरणा व निर्देश कार्य कर रहे हैं।

चेतना यात्रा 13 नवम्बर को रात्रि जालन्धर पहुँची, जालन्धर कैंट के विक्टर हायर सैकेण्डरी स्कूल में विश्राम किया, प्रातः यज्ञोपरांत बी.डी. आर्य महिला कालेज के परिसर में आयोजित सम्मेलन में चार हजार छात्राएँ-अध्यापिकाएँ उपस्थित थीं। कालेज की डायरेक्टर सुश्री स्वराज मोहन, प्रिं. वर्मा, आर्य समाज, नेहरू युवा केन्द्र, महिला संगठनों, डाक्टर्स एसोसिएशन की प्रमुख श्रीमती सुषमा चावला, सी.एम.ओ. डॉ एस.पी. शर्मा, समाज सेविका परविन्द्र देवी, जालन्धर के सांसद सरदार इकबाल सिंह, पंजाब की कल्याण मंत्री गुरुकंवल कौर आदि यहां उपस्थित थे। आर्य समाजी नेता अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट की संचालन क्षमता देखते ही बन रही थी। सभा को स्वराज मोहन, डॉ. एस.पी. शर्मा, सत्यव्रत सामवेदी, स. इकबाल सिंह, गुरुकंवल कौर, स्वामी अग्निवेश ने सम्बोधित किया। तथा मंच संचालन श्री जगवीर सिंह ने सम्भाला। 14 नवम्बर को स्वामी दयानन्द के गुरु विरजानन्द जी की जन्म स्थली करतारपुर में चेतना-यात्रा ने गुरुकुल में भोजन किया। यहां एक छोटी-सी सभा को स्वामी अग्निवेश ने सम्बोधित किया। यहां से 20 किलो मीटर दूर जण्डीयाला में रात्रि का भोजन व विश्राम किया। प्रातः बाजारों में जुलूस निकाला गया जिसमें स्थानीय संस्थाओं का पूरा सहयोग रहा।

जण्डीयाला से 30 किलोमीटर दूर अमृतसर में प्रवेश कर चेतना-यात्रा जलियांवाला बाग पहुँची जो इसका अंतिम पडाव था। यहां पहुँचते ही यात्री-गण भाव विभोर और रोमांचित हो उठे। सन् 1919 की लोमहर्षक घटना उनके मानस मण्डल को उद्वेलित करने लगी। स्वामी अग्निवेश ने भावविह्वल होते हुए यहां कहा- जिस महान् भारत का स्वप्न संजो कर सैंकड़ों बच्चों, बूढ़ों, स्त्री-पुरुषों ने इस संकरे बाग में अपने गरम लहू से स्वाधीनता की गाथा लिखी थी उस स्वाधीनता को देश में बढ़ता भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड और नारी उत्पीड़न अपने विषदंशों से आहत कर रहा है। देश के मौजूदा हालातों के चलते यहां बलिदान होने वाले देशवासियों की आत्मा निश्चय ही हमें धिक्कार रही होगी। आओ! इस पवित्र भूमि को प्रणाम करें, इसकी मिट्टी को माथे पर लगाकर संकल्प लें कि जब तक कन्या भ्रूण हत्या के अभिशाप को मिटा नहीं देंगे तब तक न खुद चैन से बैठेंगे और न अपराधियों को चैन से बैठने देंगे।'' इसके बाद वह संकल्प पत्र यहां पढ़ा गया

जिस पर हजारों लोग टंकारा से अमृतसर के मध्य अपने हस्ताक्षर कर चुके थे और जिसे महामहिम राष्ट्रपति जी को सौंपा जाना था। जलियांवाला बाग से चेतना-यात्रा स्वर्ण मन्दिर पहुँची जहां स्वामी अग्निवेश जी स्वामी इन्द्रवेश जी व जगवीर सिंह जी को सरोपा भेंट किया गया। यहां से यात्री एक शोभायात्रा के रूप में श्री ओमप्रकाश आर्य के कुशल संचालन में मुख्य बाजारों से होते हुए सिटी सेंटर ग्राउण्ड में पहुँचे। यात्रा में सभी धर्म-सम्प्रदायों के प्रतिनिधि शामिल थे। सभा मंच पर बच्चों ने 'मोय न मारियो' नाटक का मंचन किया जो भ्रूण हत्या से सम्बंधित था। अमृतसर की इस महती सभा को स्वामी ओमवेश, ज्ञानी केवल सिंह, डॉ. प्राची आर्या, सत्यव्रत सामवेदी, प्रो. कैलाशनाथ सिंह, स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी ने सम्बोधित किया।

सर्वधर्म चेतना-यात्रा के संयोजक श्री जगवीर सिंह एडवोकेट (स्वामी आर्यवेश) ने इस अवसर पर केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय के अधिकारी श्री रत्नचन्द जी का परिचय दिया जो इस यात्रा में सभी जगह उपस्थित रहे। जर्मनी की पूर्व सांसद श्रीमती एंजेलीका लुसाका का परिचय भी उन्होंने दिया जो टंकारा से अमृतसर तक सहयात्री के रूप में साथ चलती रहीं। उनकी सादगी, सद्भावना, मधुर व्यवहार से सहयात्री विशेष प्रभावित हुए। उन्हें कहीं पलंग-चारपाई नहीं मिली तो भूमि-शयन में ही उन्होंने आनन्द अनुभव किया, शाकाहारी भोजन से ही तृप्ति प्राप्त की। चेतना-यात्रा को इस मातृशक्ति से निरन्तर सम्बल, प्रेरणा, प्रोत्साहन मिलता रहा जिसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। उन्होंने अनेक स्थानों पर सभाओं को सम्बोधित भी किया। जहां आवश्यक समझा गया वहां उनके भाषण का हिन्दी अनुवाद भी साथ-साथ किया गया। इस अवसर पर अमृतसर की माता श्रीमती कौशल्या गुप्ता ने एक लाख रुपये दान देने की घोषणा की जिनमें से पचास हजार चेतना-यात्रा के लिए व पचास हजार अमृतसर के दयानन्द धाम के लिये थे। आर्य समाज नैरोबी (दक्षिण अफ्रीका) ने भी 25 हजार का दान चेतना-यात्रा के लिए भेजा था। यूनिसेफ की ओर से पाँच लाख, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से सात लाख तथा हरियाणा सरकार की ओर से पांच लाख का सहयोग यात्रा हेतु प्राप्त हुआ। स्वामी इन्द्रवेश जी को यात्रा की सफलता पर बहुत प्रसन्नता हुई तथा उन्होंने सभी साथियों को बधाई एवं साधुवाद दिया।